आस्तान ए आलिया अहमदिया अशरफिया
अशरफुल औलिया वारिसे मुस्तफा
तारिके बादशाहत पे लाखों सलाम।।

शजर–ए–मुबारका

सिलसिल–ए–आलिया
अशरफिया चिश्तिया क़ादरिया

बइजाज़त
पीरे तरीक़त ह़ज़रत अ़ल्लामा
सय्यद मोहम्मद हसन अशरफ अशरफी जीलानी,
दरगाह मख्दूम अशरफ सिमनानी, जायस जिला अमेठी, (उत्तर प्रदेश)

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।।

या सय्यद अशरफ जहांगीर।
दस्ते मन ज़ारो नातवां गीर।।
ऐ अशरफे ज़माना ज़मानए मददनुमा।
दरहाये बस्ता रा ज़े कलीदे करम कुशा।।
अशरफ नहंग दरिया दरिया बसीना दारद।
दुश्मन हमेशा पुरग़म बा ज़िके तू दोस्त दारद।।
माऐम दर जहां कि मुश्किल कुशा तुई।
मन बेकसो फक़ीरम ह़ाजत रवा तुई।।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन। वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल अम्बियाइ वल मुरसलीन। सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवं व अ़ला आलेहि व अस्ह़ाबेहि अज्मईन।।

सच्चे मुरीद और भरोसेमन्द त़ालिब को जानना चाहिए कि सिलसिल–ए–इरादत नफ्स की इस्लाह और दिल की रोशनी का नाम है और इसके लिए नेकों की संगत और रिज़्के हलाल का खाना बहुत ज़रूरी है। किसी को ह़क़ीर न जाने, मगर शरीअ़त का पाबन्द ज़रूर देखे।

ह़ज़रत मख्दूम पाक ने इरशाद फरमाया कि त़रीक़त की कोई ऐसी मंज़िल नहीं है, जहां पहुंचकर इबादत माफ हो जाती हो। फरमाया कि खास्साने हक़ यअ़नी अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों ने अ़मले स्वालेह (अच्छे काम) का कोई पहलू फरोगुज़ाश्त नहीं फरमाया। और वक्ते रहलत तक फराइज़ व वाजिबात की तो बड़ी अहमियत है, उनसे सुन्नत का कोई अदब तक

क़ज़ा न हुआ। मसाइले रोज़मर्रा का जानना बहुत ज़रूरी है। इसलिए इसके बग़ैर बहुत से ख़तरात हैं और इसके बग़ैर अच्छे अ़मल के बहुत से अस़रात बर्बाद होने का अन्देशा है। ह़ज़रत ने फरमाया कि ज़ाहिदे बे अ़मल शैतान का ताबेअ़दार होता है। और ये भी फरमाया कि खुदा का दोस्त जाहिल नहीं होता।

इन्साफ वफा और खिदमत को अपना शिआ़र बनाएं। ज़िन्दगी के वसाइल और ज़राएअ दयानतदारी की राह से और पूरी सरगर्मी से अपनाए। वक्त बर्बाद न करे। औक़ात या ता इबादत के लिए हैं या कस्बे मआ़श (रोज़गार) के लिए या खिदमते खल्क़ के लिए थोड़ा वक्त ज़रूर निकाले। अख्लाक़े नबवी को ज्यादा से ज्यादा अपने अन्दर पैदा करे। अगर मुरीद ने

अपने अख्लाक़ व अ़मल की इस्लाह़ नहीं की तो मुरीद होने का ह़क़ अदा नहीं किया। फिर वो सिलसिले का फैज़ कम पाएगा तो क्या तअ़ज्जुब। खुद दीनदार बनो और अपने अहलो अ़याल को दीनदार बनाने की मुसलसल कोशिश करते रहो।

फक़ीर सय्यद हसन अशरफ अशरफ़ी जीलानी
आस्तान–ए–अहमदिया अशरफिया, जायस शरीफ

मुख्तसर शजरा अशरफिया चिश्तिया

या रब बमुहम्मद बहरे अ़ली ब हसन सुल्ताने दीं मददे।
बिन ज़ैदो फुज़ैलो इब्राहिमो हुज़ैफा अमीनुद्दीं मददे।।

पये मुमशादो इस्ह़ाक़ो बुअहमद हम शाह मुहम्मद बुयूसुफ।
मौदूदो शरीफो हम उस्मां बमुईनो कुत्बुद्दीं मददे।।

बफरीदो निज़ामो सिराजो उला पये अशरफो नूरूल ऐन वली।
पये अहमदो क़त्तालो जलाले अव्वल बमुबारका जलालुद्दीं मददे।।

बवलीयो मुह़िब्बो इनायतो करम बहबीबो जहां व शाह अशरफ।
मख्दूमो वली बहरे नक़ी व नईमो कलीम बर हाले जमाले ह़ज़ीं मददे।।

मुख्तसर शजर–ए– अशरफिया क़ादरिया

या रब बमुहम्मद बहरे अ़ली बहसन सुल्ताने दीं मददे।
बहबीबो त़ाई व हम करखी बसिर्री व जुनैदे अर्मी मददे।।

बबूबकरो अ़ब्दुल वाहिद हम बुलफरह पये हंकारी।
बसईदो ग़ौस़ो जीलानी बअ़ली महबूब तरीं मददे।।

पये अफ्लहो बूलग़ैसो फाज़िल बउबैदो जलालो शहे सिमनां।
पये नुरूल ऐनो हाजी अहमद पये क़त्ताल गोशा नशीं मददे।।

बजलाले अव्वल बहरे मुबारक बजलाले स़ानी बहरे वली।
बमुह़िब्बो इनायतो करम बहबीबो अशरफ हादिये दीं मददे।।

पये जुल्फिक़ारो हम मख्दूम जनबा शाह वली अशरफ।
बनक़ी व शहे नईमो **हसन** अशरफ बर हाले जमाले ह़ज़ीं मददे।।

9

शजर–आ़लिया अशरफिया चिश्तिया

फज़्ल कर या रब मुहम्मद मुस्तफा के वास्ते।
मुश्किलें हल हों अ़ली मुश्किल कुशा के वास्ते।।

हज़रत ख्वाजा हसन बसरी की खूबी के लिए।
शैख़ अ़ब्दुल वाहिद वह़दत नुमा के वास्ते।।

वास्ता ह़ज़रत फुज़ैल शाहे दीन के फज़्ल का।
पीर इब्राहीम अदहम बादशाह के वास्ते।।

जुहद का हज़रत हुज़ैफा के खुदा या वास्ता।
और हुबैरा साहिबे सिदक़ो सफा के वास्ते।।

वास्ता मुमशाद का या रब मेरा दिल शाद कर।
शाह बुइस्हाक शामी मुक़्तदा के वास्ते।।

10

ख्वाज–ए–अब्दाल अहमद के महामिद के लिए।
और जनाबे बुमुहम्मद मुक्तदा के वास्ते।।

रश्के कन्आं शाहे यूसुफ का खुदा या वास्ता।
ख्वाजा कुत्बुद्दीन मौदूदे खुदा के वास्ते।।

वास्ता ह़ज़रत शरीफे ज़न्दनी का या खुदा।
ख्वाज–ए–उस्मान की हिल्मो ह़या के वास्ते।।

वास्ता हज़रत मोईनुद्दीन शाहे हिन्द का।
बख्तियारे कुत्बे दीं पीरे हुदा के वास्ते।।

वास्ता हज़रत फरीदुद्दीन की तफ्रीद का।
और निज़ामुद्दीन शाहे औलिया के वास्ते।।

दिल को रोशन कर मेरे या रब सिराजुद्दीन से।
शह अ़लाउल हक़ पीरे दोसरा के वास्ते।।

11

वास्ता सुल्तान अशरफ शाहे सिमनां का खुदा।
शाह नुरूल ऐन की जूदो सखा के वास्ते।।

शाह हाजी अहमद बन्दगी का या रब वास्ता।
हाजी क़त्ताल शेरे किबरिया के वास्ते।।

शह जलाले अव्वल के इज्लालो हिश्म का वास्ता।
शह मुबारक बोदले की इत्तेक़ा के वास्ते।।

शह जलाले दोइमी का वास्ता ऐ जुल्जिलाल।
हज़रत शाह वली बहरे अता के वास्ते।।

वास्ता शाह मुहिब्बुल्लाह के इरफान का
शह इनायत साहिबे जुहदो सफा के वास्ते।।

कर तुफैले शाह करमुल्लाह के मुझ पर करम।
शाह हबीबुल्लाह की हुब्बे विला के वास्ते।।

12

ऐ मेरे खालिक़ तुफैले हज़रते अशरफ जहां।
जुल्फिक़ार अशरफ वलीए बासफा के वास्ते।।

वास्ता है शाह मख्दमू जहां का ऐ खुदा।
और वली अशरफ फक़ीरे बे रिया के वास्ते।।

हो अ़ता क़ल्बे नक़ी रूहे नक़ी सिर्रे नक़ी।
ह़ज़रते सय्यद नक़ी बा सफा के वास्ते।।

नेअ़मतें दुनिया व दीं की अ़ता हो मुन्ईम मेरे।
मेरे मुर्शिद शहे नईमे अस्फिया के वास्ते।।

बख्श दे मौला **हसन** अशरफ को तू ग़फ्फार है।
मुर्शिदाने खानदाने चिश्तिया के वास्ते।।